Q. 2 महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित राज्य संबंधी विचारधारा

कि गाँव आत्मनिर्भर रह सके। वस्त्रों के लिए कपास की खेती चरखे करघे आदि की व्यवस्था हो। गाँव रचनात्मक कार्यक्रमों में से एक ग्राम रक्षादल बनेगा। लोगों की पारस्परिक विवाद को गाँव की पंचायत तय करेगी। ऐसी व्यवस्था वास्तविक लोकतंत्र होगी।

कुछ गाँवों के समूहों के बीच मंडल, मण्डलों से जिला, जिलों से प्रांतीय और प्रांतों से राष्ट्रीय स्तरों पर पंचायती व्यवस्था का विभाजन क्रम होगा। इसके लिए राजनीतिक दलबंदियों प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों से प्रतिनिधियों के चुनाव करने में जो अनावश्यक व्यय एवं झूठे राजनीतिक प्रचार होते हैं उनसे बचाव होगा। गाँधी ने ऐसी व्यवस्था को पंचायती लोकतंत्र तथा निर्दलीय लोकतंत्र कहा है।

प्रमुख साध्य व्यक्ति को आत्मानुभूति कराना ⟹

गाँधीजी ने राजनीतिक समाज को सबसे प्रमुख साध्य व्यक्ति को ~~आत्म~~ आत्मानुभूति कराना माना। वे व्यक्तिवादी थे। वे मानव होने के नाते हर व्यक्ति को समाज में समानता की स्थिति प्रदान करना चाहते थे। प्रत्येक व्यक्ति का पहला अधिकार अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा वैदेशिक राज्य सत्ता का विरोध करना है। गाँधी जी ने अधिकारों के साथ कर्तव्य पर भी बल दिया। ~~बिना~~ बिना इस कर्तव्य के राष्ट्रीय स्वतंत्रता का अधिकार अपना अस्तित्व खो देगा। अधिकार का उद्देश्य मानव की उन शक्तियों का विकास करना है जो मानव समाज के हित को समग्र रूप में लेती है। इस दृष्टि से अधिकार का क्षेत्र व्यक्तिगत हित न होकर सार्वजनिक होता है।

व्यक्ति के स्वतंत्रता की वकालत ⟹

गाँधीजी ने व्यक्ति के स्वतंत्रता की वकालत की है, स्वतंत्रता की ~~प्र~~ प्राप्ति करता हुआ व्यक्ति

समर्थ।

मैं अपने हितों को उत्सर्ग कर दूँ। गाँधीजी ने तिलक के प्रसिद्ध कथन "स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूँगा" का समर्थन किया है।

उन्होंने राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांत का भी समर्थन किया साथ ही आर्थिक स्वतंत्रता का भी समर्थन किया। उन्होंने कहा कि राज्य को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर व्यक्ति को रोजगार पाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। मानव के द्वारा मानव का शोषण किसी कीमत पर नहीं होना चाहिए।

* राज्य का सर्वोच्च कार्य शांति एवं सुरक्षा की स्थापना ⟹

राज्य का सर्वोच्च कार्य शांति और सुरक्षा की स्थापना करना है, अपूर्ण मानवों के द्वारा समाज की शांति भंग हो सकती है, इसलिए सामाजिक सुरक्षा के निर्माण में पुलिस तथा सेना की आवश्यकता पड़ती है। पुलिस में ऐसे व्यक्ति की नियुक्ति होनी चाहिए जो अहिंसा में विश्वास करते हैं। उनका काम जनता की सेवा में होनी चाहिए ताकि वे कानून तथा व्यवस्था बनाये रखने में जनता की सहायता कर सकें। जनता का यह कर्तव्य है कि वह इस कार्य में पुलिस की सहायता कर सकें।

गाँधी ने अपराधों को मानसिक तथा सामाजिक रोग माना है और कहा है कि जब तक सामाजिक जीवन अहिंसा के आदर्शों के अनुसार सञ्चालित नहीं होगा तब तक अपराधी प्रवृत्ति का भी अंत नहीं होगा। उन्होंने कहा है कि "हमें अपराध से घृणा करनी चाहिए न कि अपराधी से।"

उन्होंने मृत्युदंड का विरोध किया। मृत्युदंड अपराधी को अपने आचरण में सुधार करने से वंचित करता है। उनका कहना था कि न्याय ~~सरल~~ ~~सुगम~~ व्यवस्था सरल, सुगम तथा सस्ता होना चाहिए। उनका मत था कि वकील लोग विवाद को और बढ़ावा

बढ़ाते हैं, और जटिल बनाते हैं, इसमें अनावश्यक व्यय होता है।

~~निष्कर्ष~~ ~~निष्कर्ष~~

निष्कर्ष — संक्षेप में कहा जा सकता है, कि गाँधी के राज्य संबंधी विचार ~~स्वप्नलोकी~~ स्वप्नावलोकी है। उनका रामराज्य स्वतंत्रता, समानता, भातृत्व पर ~~आधा~~ आधारित है, जो शोषण विहीन है। जिस राज्य में शेर और बकरी एक ही घाट में पानी पीते है। और ऊँच-नीच का कोई भेदभाव नहीं हो वही राज्य है। गाँधी ~~के~~ के राज्य की अवधारणा वैसे राज्य की है, जो पूर्ण कालिक नहीं है। जबतक मनुष्य में पूर्णता नहीं आती तब-तक राज्य का अस्तित्व है। जब मनुष्य में पूर्ण विवेक आ जाएगा, राज्य की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।